वेद का संक्षिप्त परिचय

आचार्य माधव शास्त्री
सोजत

तत्कालीन वेद रक्षा सनातन परम्परा से हुआ करती थी वेद अध्येता का समस्त दायित्व समाज वहन करता था शनैः-शनैः समाज में विस्तार होने के कारण प्रचलित नियम में शिथिलता आना प्रारम्भ हुई अतः वेद के पठन-पाठन का दायित्व मात्र ब्राह्मण पर केन्द्रित हुआ तब से इसे अपना अधिकार समझते हुए वेद की सुरक्षा निर्धारित की। कालान्तर में इनके द्वारा भी सुरक्षा नहीं हो पाई तब वह लिपिबद्ध हुआ पुस्तक के रूप में मानव के सामने प्रस्तुत किया गया इसके पहले वेद, वाणी में निहित था। वेद को अपौरुषेय तथा परम् की वाणी कहा गया है जिसका मानवों के द्वारा सुसंस्कृत रुप में साक्षात्कार किया गया। ऋषियों, मुनियों, योगियों तथा अध्येताओं द्वारा ध्यान मुद्रा के अन्तराल परिष्कृत रूप में देखा व समझा गया। वाणी जो चराचर के द्वारा उच्चारित होती हैं .....

वाणी प्राणियों के शारीरिक प्रयास के आधार पर चार भागों में विभक्त होती है जिन्हें परा,पश्यन्ति,मध्यमा और वैखरी इनमें वैखरी का प्रयोग किए जाने पर वाणी मुख से शब्दों में प्रतिबिंबित होती है,मध्यमा गले में वायु के आवेग में निहित होती है,पश्यन्ति वाणी शब्दों के उच्चारण के लिए बाध्य करने का प्रस्ताव का नाम है तथा परा वाणी जिसको सरस्वती भी कहा जाता है जो प्राणियों के मूल में शब्द सिद्धावस्था में पहले से ही व्याप्त रहता है इसीलिए शब्द को अपौरुषेय कहा गया है क्योंकि यह दो प्रकार से बोला जाता है पहला व्यक्त रुप दूसरा अव्यक्त रुप,व्यक्त रुप का उच्चारण लिपिबद्ध को देखते हुए किया जाता है तथा अव्यक्त रुप शरीर संघात व अवयवों के स्पर्श के कारण वायुमंडल (परम् व्योम) में फैल जाता है। इसलिए शब्द ब्रह्म माना गया है चाहे कोई भी नाद या भाषा हों वह दैवीय शक्तियों से युक्त होती है। वेद का स्वरुप शब्दमय है और वेद को लिपिबद्ध कर एक किया गया था अतः इस धरती पर वेद एक ही है कालान्तर में में इसको चार भागों में विभक्त किया गया 1.ऋग् 2.यजुष् 3.साम 4.अथर्व .....

वेद को चार विभाग में व्यवस्थित करने के लिए उनके विषय, वस्तु और हेतु को लक्ष्य निर्धारित किया गया क्योंकि वेदों की ऋचाएं कलियुग में ब्राह्मणों की अनदेखी के कारण स्थानच्युत होकर प्रकरणों के अनुसार बिखर जाते हैं। कलियुग की समाप्ति के दौरान चारों वेदों का मिश्रण हो एक वेद में समाहित हो जाता है उसे ऋग्वेद कहा जाने

लगा।जो ऋचाएं यज्ञ विधान को फल प्राप्ति तक पहुंचाती हैं उनके सम्मिलित स्वरुप को यजुर्वेद की संज्ञा दी। ऋचाओं के स्पष्ट पाठ व उच्चारण हेतु सस्वर गान को संयत किया उसे साम वेद की संज्ञा दी तथा अथर्ववेद में जीवन दायिनी सुरक्षा कारिणी , संजीवनी शक्ति तथा सामाजिक दृष्टि प्रदान करने वाली ऋचाओं का समूहीकरण है।

वेद देव,दानव,मानव तथा चराचर का एक संरक्षित कोष है जिसमें ऋषियों, मुनियों योगियों और वैज्ञानिकों की परम रहस्यों के सिद्ध सिद्धांत शोध का संग्रह है जो मात्र कुछ युगों का ही नहीं अपितु करोड़ों युगों से प्राप्त ज्ञानार्क संग्रहित हैं।यह दैवीय व मानवीय विज्ञान के उत्थान और पतन का साक्षी बना रहा है उनमें से नवजीवन का मार्गदर्शन भी अद्यावधि हमें मिल रहा है। जब विज्ञान अपनी श्रेष्ठता की पराकाष्ठा तक पहुंचता है जब मानव अपनी परम बौद्धिक क्षमता को पा लेता है तब वेद अपने में कूटस्थ ज्ञान को वितरित करता है पराकाष्ठा पर पहुंचा विज्ञान तथा मानव अपने द्वारा अर्जित तत्कालीन शोध व ज्ञान को युगों तक सुरक्षित करने के लिए एक मृत्युन्जयी भाषा का चयन करता है उसमें सभी शोध का सार मूल रुप में समर्पित कर देते हैं वह निश्चय ही वेद हैं उस वेद का स्वरुप निर्णय भाषा व लिपि के माध्यम से समझा जा सकता है। ठ्ठठ्ठमैं अब आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि वर्तमान में जो वेदों का स्वरुप जो संहिताबद्ध है,वह ही वेद का वास्तविक स्वरूप है ?

नहीं...क्योंकि वेद का रुप व्यापक है जितने भी प्रारम्भिक मूल ग्रन्थ हैं वे भी वेद से ही लेकर पृथक् अस्तित्व में आ गए हैं जिनमें संहिता ,ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ,स्मृति ग्रन्थ, उपनिषद ग्रन्थ,कला ग्रन्थ और आयुर्वेदिक ग्रन्थ ये सब वेदमय हैं।यह कहा जा सकता है कि सभी ग्रन्थ वेद से ही हमें मिले हैं।अब मैं सभी ग्रन्थों के कथन को स्पष्ट करता हूं।

दैवीय,दानवीय,राक्षसीय तथा मानवीय संस्कृतियां युगों से अनवरत चली आ रही हैं वे सब वेद के विज्ञ थे जिन्होंने वेद को श्रुति के अनुसार मौखिक रूप से व्याख्या व स्मरण रखते हुए श्रुति को अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रयास किया गया था। शनैः शनैःदैवीय तथा दानवीय शक्तियां संघर्ष के दौरान विनष्ट हो गए तब वैदिक रूप को मानवों ने सुरक्षा व प्रचार का दायित्व वहन किया फलस्वरूप वेद निधि मानव के हाथ में आ गई मानवों ने इस दैवीय तथा दानवीय वेद निधि को परम्परा के अनुसार श्रुति यज्ञ का अनुष्ठान करते हुए वेदों के ज्ञान को वितरित किया। उस समय वेद की शाखाओं का अध्ययन तथा अध्यापन का कार्य परस्पर वितरण किया गया सम्बन्धित शाखा का अध्ययन मात्र दायित्व था सम्पूर्ण वेद का नहीं क्योंकि वेद का विस्तार अधिक हुआ करता था इस विधि का दिग्दर्शन आज भी परम्पराओं में निहित हैं। विधिपूर्वक वेद की सुरक्षा की गई । मृत्यन्ज्यी भाषा में वैदिकी प्रगति का आधार लिपि ने लिया प्राप्त शाखा ज्ञान को मानवों ने लिपि में ढालना प्रारम्भ किया उन शाखाओं में ज्ञान को संस्कृत,यवनी, तमिल,बंग्ला

तथा अन्य भाषा के आधारभूत लिपियों का आश्रय लेकर वेद को स्वरुप दिया जाने लगा ।

मेरे द्वारा उपरोक्त भाषाओं को बताने कारण यह है कि उस समय अलगअलग संस्कृतियों का संगम होता था लेकिन एकता वेद ही तय करता था। वेद की ऋचाओं तथा शाखाओं की सुरक्षा का माध्यम यज्ञ होते थे, जो आज भी प्रभावी है, अर्थात सभी संस्कृतियां पाठन ,मनन और यजन करती हुई वेदविहित विज्ञान को निरन्तर बनाये रखने का प्रयास किया।

अतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान संसार में धर्म के आधार पर जितने भी पुरातन ग्रन्थ हैं या जिस भाषा में लिपिबद्ध हैं वे सब वेद ही है। मानव अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार ही इनकी व्याख्या कर सकता है लेकिन इनका परम रुप की गई टिप्पणियों से अलग ही होता है। वेद भगवान कहते हैं कि इस संसार में विद्या दो प्रकार से उपलब्ध हैं पर और अपरा जिसमें पर रुप जो हम इन्द्रियों से ग्रहण कर सकते हैं और अपरा सूक्ष्म रूप होने के कारण उसे समझा जाता है अतः परा और अपरा विद्या इन दोनों को भली-भांति समझ कर ही प्रतिपादन करना चाहिए। देववाणी से सम्बन्धित वेद जनसाधारण में जाने जाते हैं जो इस दौरान वेदों का ज्ञान हमें संहिता ग्रन्थों , ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यक ग्रन्थों ,स्मृतियों , उपनिषदों, आयुर्वेदिक चिकित्सा ग्रन्थों तथा महा काव्यों में यत्र तत्र मिलता है।

पूर्व में बताया गया है कि वेदों की उपलब्धता मात्र संहिता को पढ़ने व जानने से नहीं होता बल्कि समग्र दृष्टि से समझना चाहिए क्योंकि वेद निहित प्रकाश एक स्थान से नहीं समझा जाता मैंने यह भी कहा है कि सभी धार्मिक ग्रन्थों में भी वेद ही है तब ही धर्म की अपनी सत्ता तय होती है इसलिए संसार में जितने भी पुरातन धर्म हैं उनका आधार वेद है। पुरातन समय से सनातन धर्म सभी का एक धर्म था जो आज भी निरन्तर अपने अस्तित्व में चलायमान है मानवीय विकास के दौरान कई धर्म आए और समय के साथ पुनऱ्सनातन धर्म में समाहित हो गये आजकल हमारे समक्ष भी बहुत से धर्म मानवीय व्यवहार में गतिशील हैं उनके अपने ग्रन्थ हैं प्राचीनतम धर्म यवन धर्म है जो वैदिक कालीन परम्परा से जुड़ा हुआ है उसके बाद बौद्ध धर्म का प्रवेश हुआ उन्होंने भी वेद को आधार बनाकर प्रचार किया गया तदुपरान्त ईसाई धर्म की स्थापना हुई इसको नये धर्म की भी पहचान मिली जिसमें धार्मिक नये नियम भी प्राप्त किए उसके बाद में इस्लाम धर्म का जागरण हुआ इस धर्म की विशेषता यह है कि इन्होंने पुरातन ग्रंथों को अपने धर्म में समाहित किया इनके भी ग्रन्थ अपौरुषेय हैं जिन्हें परम् व्योम में देखकर लिपिबद्ध किया अतः यह सिद्ध होता है कि ये सभी वेदगर्भा हैं।